विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय -संस्कृत दिनांक 08-06-2021

वर्ग-सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

गुण संधि - आद्गुण:, संस्कृत व्याकरण

गुण संधि - आद्गुण:, संस्कृत व्याकरण

गुण संधि का सूत्र **आद्गुण:** होता है। यह संधि स्वर संधि के भागो में से एक है। संस्कृत में स्वर संधियां आठ प्रकार की होती है। दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि, अयादि संधि, पूर्वरूप संधि, पररूप संधि, प्रकृति भाव संधि।

इस पृष्ठ पर हम **गुण संधि** का अध्ययन करेंगे !

गुण संधि के चार नियम होते हैं!

अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए ; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं। जैसे -

(क)

अ + इ = ए ; नर + इंद्र = नरेंद्र

अ + ई = ए ; नर + ईश= नरेश

आ + इ = ए ; महा + इंद्र = महेंद्र

आ + ई = ए महा + ईश = महेश

(ख)

अ + उ = ओ ; ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश ;

आ + उ = ओ महा + उत्सव = महोत्सव

अ + ऊ = ओ जल + ऊर्मि = जलोर्मि ;
आ + ऊ = ओ महा + ऊर्मि = महोर्मि।

(ग)

अ + ऋ = अर् देव + ऋषि = देवर्षि

(घ)

आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

वृद्धि संधि

वृद्धि संधि का सूत्र ब्रध्दिरेचि होता है। यह संधि स्वर संधि के भागो में से एक है। संस्कृत में स्वर संधियां आठ प्रकार की होती है। दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि, अयादि संधि, पूर्वरूप संधि, पररूप संधि, प्रकृति भाव संधि। इस पृष्ठ पर हम वृद्धि संधि का अध्ययन करेंगे !

वृद्धि संधि के दो नियम होते हैं!

अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे -

नियम 1.

अ + ए = ऐ → एक + एक = एकैक ;

अ + ऐ = ऐ → मत + ऐक्य = मतैक्य

आ + ए = ऐ → सदा + एव = सदैव

आ + ऐ = ऐ → महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

नियम 2.

अ + ओ = औ → वन + औषधि = वनौषधि ;

आ + ओ = औ → महा + औषधि = महौषधि ;

अ + औ = औ → परम + औषध = परमौषध ;

आ + औ = औ → महा + औषध = महौषध